International Journal of Research in Social Science
Vol. 12 Issue 07, July 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मुक्तीबोध की काव्य भाषा

डॉ. रेणु बाली
अध्यक्ष-हिंदी विभाग, वसंतराव नाईक शासकीय कला व समाज विज्ञान संस्था, नागपुर
e-mail : renubaliindia@rediffmail.com

मुक्तीबोध ने छायावाद से रचनाऐं आरंभ कर प्रगतिवाद, प्रयोगवाद व नई कविता की युगधाराओं से जुड़ अपने काव्य में ऐसी काव्य भाषा का प्रयोग किया जो आगामी रचनाकारों के लिए प्रेरणा स्त्रोत रही। मुक्त छंद की सटीक भाषा के प्रयोग के लिए आज उन्हें कबीर तथा निराला परम्परा को अग्रसर करने वाला काव्य प्रेरक माना जाता है। इनके काव्य की भाषा उनके अनूठे प्रतीक, बिम्ब, अलंकार, प्रचुर शब्द का विविधतापूर्ण प्रयोग, मुहावरे-लोकोक्तियोंके प्रयोग तथा छन्द विधान के सार्थक प्रयोग के साथ फैंटेसी के रूप मे हिन्दी साहित्य में अपनी पहचान अंकित करती है। कवि की प्रतिमा शक्ति ही मूलत: कवि की भाषा को प्रांजल बनाती है और इसे संप्रेषण में सहायता भी करती है जिसके द्वारा काव्य का संप्रेक्षण कवि की इसी भाषा के द्वारा होता है। कवि एक भावुक और संवेदनशील प्राणी होता है जो जीवन और प्रकृति के अनेक रूपों में सौदर्य, राग-विराग, विरह आदि भावों को भाषा के माध्यम से प्रस्तुत करता है। इस विषय में मुक्तिबोध लिखते हैं "कवि भाषा का निर्माण करता है, जो कवि भाषा का निर्माण करता है, विकास करता है, वह निसंदेह महान होता है"।(१)

मुक्तिबोध के अनुसार "कलाकार को शब्द साधना द्वारा नये-नये भाव और नये अर्थ स्वप्न मिलते हैं। (२)

मुक्तीबोध की काव्य भाषा

मुक्तिबोध एक सशक्त यथार्थवादी कवि रहे हैं, अत: उनकी भाषा उनके अपने दृष्टिकोण से प्रभावित रही है। उनकी काव्य भाषा भी उनकी विचारधारा की विशिष्टताओं की तरह मौलिक हैं। जगदीशगुप्त मुक्तिबोध की कविताओं के बारे में लिखते हैं, "मैं उनकी कविताओं को पढकर इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति के अनुरूप रूपकों, प्रतीकों बिम्बों की परिकल्पना करते हुए सशक्त भाषा ग़ढी है। अत: जितने अंशों में उनकी अभिव्यक्ति सफल हुई है उतने अंशों में वे अपनी मान्यता के अनुरूप महान कहलाने के हकदार हैं"। (३)

मुक्तिबोध अपने सम्पूर्ण कवि जीवन में भाषा के प्रति बड़े सचेष्ट रहे हैं। उनकी प्रत्येक रचना कई बार काट-छांट के बाद पूरी होती है। एक यथार्थवादी कवि होने के नाते उन्होंने अपनी भाषा को अपनी यथार्थ अभिव्यक्ति के अनुरूप ही प्रयुक्त किया हैं। उनके अनुसार कलाकार भाषा का निर्माण करता है जो विभिन्न शब्दावलियों का मिश्रित रूप है। उन्होंने जिस भाव या विचार के लिए जो भी भाषा उचित रही उसी का प्रयोग किया। उन्होंने अपनी काव्य भाषा में तत्सम, तदभव, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, सभी भाषाओं का प्रयोग किया है। इनके काव्य की सबसे ब़डी विशेषता रही कि उनकी भाषा में भावना के विद्रोह के साथ भाषा का विद्रोह भी ऩजर आता है। उन्होंने सौंदर्य और अंलकार पर ध्यान न देकर शब्द के अर्थ की शक्ति पर ध्यान दिया। मुक्तिबोध ने अपने जीवन के भावों और विचारों की यथार्थ अभिव्यक्ति के लिए कविता को लालटेन की रौशनी जैसे बनाने का प्रयास किया है।

उन्ही के शब्दों में "कविता यदि जीवन वहन का लालटेन है, हो सके तो इसका हमें प्रयत्न करना होगा"। (४)

मुक्तिबोध के काव्य के दो प्रकार सामने आते हैं- पहला यथार्थवादी और दूसरा भाववादी या रूमानी उनके अनुसार "कलाकृति स्वानुभूत जीवन की कल्पना द्वारा पुनर्रचना है। यथार्थवादी शिल्प के अन्तर्गत, कलाकृति यथार्थ के अन्तर्नियमों के अनुसार यथार्थ के बिम्बों की क्रमिक रचना प्रस्तुत करती है किन्तु भाववादी रोमांटिक शिल्प के अन्तर्गत कल्पना अधिक स्वतन्त्र होकर जीवन की स्वानुभूत विशेषताओं को समष्टि चित्रों द्वारा, प्रतीक चित्रों द्वारा प्रस्तुत करती है"। (५) मुक्तिबोध की काव्य भाषा के विषय में डॉ. बच्चन के विचार हैं, "मुक्तिबोध की रचनाओं को तीन बिन्दुओं द्वारा समझा जा सकता है। ये तीन बिन्दु हैं ……. अंधेरा, टेरर और प्रकाश"।

मुक्तिबोध की यात्रा का प्रस्थान बिन्दु है अंन्धेरा । अंधेरे की अरक्षात्मक भयावह स्थितियाँ उसे टेरर या दहशत की ओर ले जाती हैं। अंधेरे को प्रकाश में बदलने की प्रेरणा टेरर से मिलती है। टेरर यात्रा का दूसरा मोड़ है। प्रकाश तक पहुँचने के लिए इस दस्तूर से गुजरना होगा। भाषा प्रयोग के बारे में मुक्तिबोध ने अपने काव्य के द्वारा स्पष्ट किया कि "वे कहते हैं भाषा

विचित्र/जिसमें शब्द हैं कलाहीन/जिसमें प्रयोग है ग्राम्य और वे अति कठोर/जो भी नवीन/पर तू सुन मत ओ कलाकार/ तेरे शब्दों में लाख-लाख दिलवालों का उदगार"। (६)

काव्य में विदेशी भाषा के शब्दों का प्रयोग भी यथार्थ की अभिव्यक्ति के लिए भावानुरूप किया गया। स्थानीय शब्दों मे मराठी होने के नाते मराठी के सामान्य शब्दों का प्रयोग ब़डा सहज हुआ है। भाषा के प्रयोग में उनकी विचारधारा यथार्थ के मार्ग पर जाती हुई दिखाई देती है। उनका काव्य भाषा में कभी संस्कृत निष्ठ सामाजिक पदावली की अंलकार विथिका से गुजरती है कभी अरबी-फारसी तथा उर्दू के नाजुक लजीले हाथों को थाम कर चलती है कभी अंग्रेजी की इलैक्ट्रिक ट्रेन पर बैठकर जल्दी से खटाक-खटाक निकल जाती है और कभी विशाल जनसमूह के शोरगुल और धक्के-मुक्के के बीच एक-एक पर तीव्र डालती हुई रूक कर चलती है।

विविध रूपी भाषा के साथ मुक्तिबोध अपनी काव्याभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाने के लिए रंगो का भी सार्थक प्रयोग किया है और ये रंग यथार्थ की प्रतीती के लिए उनके काव्य में आकर अपनी प्रतीकात्मकता को सफलतापूर्वक सिध्द करते हैं। मुक्तिबोध जिस प्रकार जीवन के संघर्षो से जूझते हैं उसी प्रकार वे भाषा के द्वन्द को भी झेलते हैं। अपनी आत्माभिव्यक्ति को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने के लिए जिस शब्द की आवश्यकता हुई उसी को उन्होंने लिया चाहे वह कैसी भी भाषा का हो, विशेष वस्तु का हो या भाव चिन्तन का। अपनी काव्य अभिव्यक्ति को मुक्तिबोध विविध भाषा रूपों में व्यक्त करने का भी प्रश्रय लेते हैं। उनके काव्य में मुहावरे और लोकोक्तियों का भी प्रयोग हुआ है।

मुहावरों का प्रयोग :

मुक्तिबोध की भाषायी शक्ति उनके मुहावरा प्रयोग में छिपी है जिनका चयन उन्होंने अभिव्यक्ति की सारगर्भिता के लिए किया है। मुक्तिबोध ने अपने काव्य में इनका प्रयोग ही नहीं किया अपितु नये मुहावरे गढ़े भी हैं। उनके काव्य में प्रयुक्त मुहावरों का पूरा भण्डार है। यथा- "जमाना सांप का काटा", "सच्चाई की आँख निकालना", "दिल की बस्ती उजा़डना", "हार का बदला चुकाना", "मन टटोलना", "थाह लेना", "घर लिया जाना", "अपना गणित करना", "टूट पड़ना", "जमाना सख्त होना", "मंछलियाँ फंसाना", "देवदासी चोलियां उतारना", "जिंदगी के झोल", "बौध्दिक सींग उगना", "आँख फा़डकर देखना", "केंचुली उतारना", "उर में तिर आना", "आखों देखी", "सिटी पिटी गुम होना", "लार टपकना", "रास्ता काटना", "भौहें चढ़ाना", "आईना होना", "भाग खड़े होना", "दांत पीसना", "दांत किटकिटाना", "गुल करना" आदि मुहावरों का प्रयोग उनके काव्य को स्पष्ट और यथार्थ अभिव्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है।

व्यंग्य शैली का प्रयोग

व्यंग्य का और यथार्थ एक दूसरे के पूरक माने जाते हैं। व्यंगयात्मक भाषा का प्रयोग हर पहलू के यथार्थ को उभारने के सहायक होता है। मुक्तिबोध गहन सामाजिक अनुभूतियों के जनवादी कवि रहे हैं जो सामाजिक चिन्ताओं और संवेदनाओं से जुड़कर चलने वाले कवि हैं। उनके साहित्य के अधिकांश भाग में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक विसंगतियों और विद्रूपताओं पर प्रहार किया गया है।

मुक्तिबोध जन विसंगतियों और विडम्बनाओं पर प्रहार करते हैं तो अत्यंत स्पष्ट और खुलकर उनकी प्रगतिशील चेतना, विसंगतियों, को सामाजिक संरचना की विडम्बनाओं को, शोषण अत्याचार, अन्याय के विभिन्न रूपों को सहज पहचान लेती है। यदि समाज की विसंगतियों का वर्णन हो, चाहे किसी का कृत्रिम मुखौटा उतारना हो, चाहे किसी संस्कृति का वर्णन करना हो, व्यंग्यात्मक भाषा ा से ही काव्य का अर्थ समझने में सहायता करता है। डॉ. शेरगंज गर्ग के शब्दों में, "सच्चाइयों और विडम्बनाओं को बगैरे तराशे और संवारे हुए प्रस्तुत करना भी मुक्तिबोध की प्रकृति रहा है और यही प्रवृत्ति उन्हे कविता में व्यंग्य की ओर अग्रसर करना है"।(७)

उनकी कविता में व्यंग्य गहरी प्रभावोत्पादकता पैदा करता है। उनकी ब्रम्हराक्षस कविता में निष्क्रिय बौध्दिकता पर गहरा प्रहार गहरी व्यंग्यात्मकता से किया गया है। वैसे तो मुक्तिबोध का अधिकर काव्य व्यंग्य की पैनी धार पर यथार्थ को उध्दाटित करता है फिर भी इसमें रोचकता और जिज्ञासा निरंतर बनी रहती है। व्यंग्य शैली मुक्तिबोध के लिए उनके काव्य का सशक्त माध्यम ही नहीं विद्रूप यथार्थ को व्यकत करने की मजबूर भी थी। इससे यथार्थ संप्रेषण में उन्हें विशेष सहायता मिलती और दूसरे भावाभिव्यक्ति भी रोचक और सरल हो जाती। आमजन और उनके दुख और दर्दो से जुड़ने के कारण मुक्तिबोध जनवादी कवि कहलाए। सामान्य जन की पक्षधरता से उनकी भाषा व्यंग्य के साथ सामान्य होते हुए भी विशिष्ट रूप लेती है।

अंलकार योजना

अंलकार शब्द की रचना अलंक और कार दो शब्दों के योग से हुई है। अलंक का अर्थ श्रृंगार या आभूषण और कार का अर्थ करने वाला, इस प्रकार अलंकार का सामान्य भाव है श्रृंगार करने वाला या शोभा बढ़ाने वाले माध्यम को अलंकार कहते है।

अपने काव्य शिल्प को अधिक गंभीर बनाने के लिए मुक्तिबोध ने काव्यभाषा के साथ अंलकारों का भी आश्रय लिया। अंलकारों का प्रयोग उन्होंने काव्य सौन्दर्य में वृध्दि करने के लिए न करके काव्याभिव्यक्ति को सरल व प्रभावी बनाने के लिए किया है। उनके काव्य में अंलकार स्वाभाविक रूप से आए हैं। मुक्तिबोध ने अंलकारों के साथ प्राचीन और परम्परागत अंलकारों का सर्वथा मौलिक प्रयोग भी किया हैं । उनके काव्य में अंलकार प्रयोग यथार्थ की वैविध्यमयी अनुभूतियों के सही चित्रण के लिए स्वाभाविक शैली में हुआ है।

छन्द योजना -

छन्द को हृदयगत भावों की संगीतात्मकगेयता के साथ व्यक्त करते हुए अण्यक्त रखने वाली विशेष शब्द योजना का एक ऐसा स्वाभाविक, सुंदर और समाकर्षक विधान है जो हमें मुक्तिबोध के काव्य में अक्सर दिखाई देता हैं। उन्होंने मुक्त छंदो के विविध प्रयोग अपनी अनुभूति को साकार रूप देने के लिए किए हैं।

मुक्तिबोध काव्य की प्रतीक योजना

मुक्तिबोध काव्य की प्रतीक योजना भी प्रत्येक संदर्भ में एक विचारधारा को अभिव्यंजित करने का लक्ष्य लेकर चलते हैं। उनके प्रतीक उनकी माक्र्सवादी विचारधारा, उनके यथार्थ और काव्य में उपस्थित विसंगतियों को आकार प्रदान करते हैं। मुक्तिबोध की प्रतिभा समाजोन्मुखी, ध्येयवादिनी, प्रतिवादिनी, और भावमयी है। आधुनिक मन की विशेषतय: अपने परिवेश के प्रति उदासीनता, उपेक्षता, मूल्यों मे अविश्वास और मूल्यों के प्रति अनासक्ति की भावना उनमें नहीं है। वे जीवन के प्रति ब़डे भावुक हैं।

फैंटेसी

मुक्तिबोध के अनुसार "फैंटेसी एक झीना पर्दा है जिसमें जीवन तथ्य झांक-झांक उठते हैं। मुक्तिबोध ने अपने काव्य मे फैंटेसी का प्रयोग अनेक कारणों से किया है। एक तो वे अंतर्मुखी कवि रहे हैं दूसरे माक्र्सवादी विचारधारा से जुडने के कारण भी फैंटेसी का उन्होंने प्रयोग किया। मुक्तिबोध ने फैंटेसी के द्वारा पाठक वर्ग को इनसे परिचित कराना चाहते हैं। मुक्तिबोध की फैंटेसी में उपमा, रूपक, दृष्टान्त, अंलकार, बिम्ब प्रतीक एक साथ मिल कर लम्बी कविताओं में फैंटेसी का रूप लेकर प्रयुक्त हुए हैं जिसमें पहाड़, पठारगुफा, समुन्दर, अंधेरा, बाव़डी, आत्मसंभावना, अंतर्मन का डर से अनेक प्रकार के दबाव व तनावों की अभिव्यक्ति हुई है। मुक्तिबोध के अनुसार कभी-कभी फैंटेसी जीवन की विस्तृत वास्तविकताओं को लेकर उपस्थित होती है और कथा के अंतर्गत जो पात्र, चरित्र और कार्य प्रस्तुत होते हैं वे सभी प्रतीक होते हैं-वास्तविक जीवन तथ्यों के"। (८)

मुक्तिबोध भाषा विचार के लिए किसी रूढ़ियों का सहारा नहीं लेते। मुक्तिबोध की समर्थ भाषा उनके काव्य को प्राणवान बनाने में समर्थ है। उनहोंने लम्बी कविताओं में फैंटेसी, छंदों, प्रतीकों, नये भाषा शब्दों का प्रयोग करके पुरानी रूढ़ियों के प्रति विद्रोह पैदा कर हम पाठकों का मन छू लिया है। यही कारण है कि उनकी काव्य भाषा समृध्द, रोचक और स्पष्ट रही।

संदर्भ

१) नेमीचन्द्र जैन, मुक्तिबोध रचनावाली - ४ पृ. १०८
२) वही
३) गंगाप्रसाद विमल, मुक्तिबोध का रचना संसार, पृ. ७१
४) गजानन माधव मुक्तिबोध, नयी कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबंध पृ. ४
५) नेमीचन्द्र जैन, भाग-४, पृ. २१७
६) नेमीचन्द्र जैन, मुक्तिबोध रचनावाली भाग-१ पृ. ६५
७) मुक्तिबोध का साहित्य : एक अनुशीलन, पृ. १२१
८) नेमीचन्द्र जैन मुक्तिबोध रचनावाली भाग ४, पृ. २२१